मनोज
कॉमिक्स
संख्या 718
मूल्य 6.00
RFN
हवलदार बहादुर
और
चमत्कारी अंडा
VARUN'S SCAN

चित्रांकन : बेदी
लेखक : विनय प्रभाकर

पहली बार अक्लमंदी का काम किया है खड़गसिंह ने। बीट बॉक्स में तो बस आराम ही आराम होगा।

ठीक है जी! ही...ही... ही!

ही... ही... ही करके खुश होने की जरूरत नहीं है। सदर क्षेत्र में खूंखार सिंह नामक एक बदमाश ने उत्पात मचाया हुआ है। तुम्हें उसे काबू करना होगा।

यह तो अच्छी खबर है रामधन! पन्द्रह दिन तक हम उस खुर्राट खड़गसिंह के खड़पच्चे से बचे रहेंगे। जा, तू एक राउंड लगाकर आ-जा। मैं जरा बैठता हूं।
ओ. के. सर!
भुट्टा खिलाऊं सरकार?
नहीं, भुट्टा अच्छी चीज नहीं होती।
फिर अचानक-
अबे ओय, तू पुलिस बीट बॉक्स के निकट बैठकर भुट्टे क्यों भून रहा है? जानता नहीं, फुटपाथ पर रास्ता रोककर बैठना गैरकानूनी है।
इस क्षेत्र में और भी तो गैर-कानूनी काम होते हैं साहब! फिर मैं तो कई वर्षों से इसी स्थान पर ठिया लगाता आ रहा हूं।
पुलिस से जुबान लड़ाता है। हवालात में बंद करके सड़ा दूंगा साले। चल, उठा अपना टीम-टाम।
क... क्या करते हो साहब?
अबे, मैं बड़ा कड़क हवलदार हूं। अब इस इलाके में कोई गैरकानूनी काम नहीं होगा। एक-एक को देख लूंगा मैं...।
छ... छोड़ दीजिए साहब!
VARUN'S SCAN

भुट्टे वाले की दुर्गति होते देख छोले वाले ने अपना खोमचा उठाया और दौड़ लिया।
ही... ही... ही! देखा मेरा रोब? कैसे भागा जा रहा है वह?
ठ... ठीक है साहब! छोड़ दीजिए, मैं भी भाग लेता हूं।

तो जा भाग। और इलाके में सबको बता दियो कि हवलदार बहादुरसिंह की ड्यूटी लगी है यहां। कोई भी फुटपाथ पर दुकान लगाए नजर आ गया तो हवालात में बंद करके सड़ा दूंगा उसे!
अ... अच्छा जी!

इधर हवलदार बहादुर गरीब भुट्टे वाले पर रोब झाड़ रहे थे और उधर बाजार की एक दुकान पर खूंखारसिंह अपना हफ्ता वसूल कर रहा था।
पैसे निकाल बे!
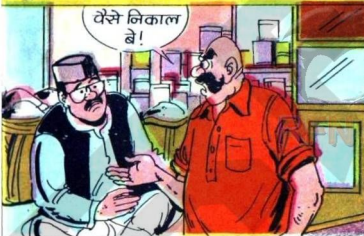
श... शाम को ले लेना खूंखारसिंह जी! अभी तो बोहनी भी नहीं हुई...।
अबे! तेरी बोहनी की तो...।
गंदी गालियां बकते हुए खूंखारसिंह ने दुकानदार की गरदन दबोच ली।

निकाल पैसे...।
य... यह क्या करते हो...?

चुप... अब यह सब मेरे हो गए हैं। एक भी वापस नहीं मिलेगा।
अरे! कोई बचाओ मुझे... पुलिस को फोन करो।

हा...हा...हा!
लुट गया। बरबाद हो गया। हाय!
हवलदार बहादुर के हाथों पिटा हुआ भुट्टे वाला उधर से गुजरा।
क्या हुआ लाला जी?
खूंखारसिंह लूटकर ले गया भइया। पूरे एक हजार रुपये थे।
घबराओ नहीं लाला। इलाके में एक बहुत कड़क पुलिस हवलदार आया है। बाहर जो लकड़ी का खोखा लगा है न, वहीं बैठा है। उनसे जाकर शिकायत करो।
अच्छा जाता हूं।
हवलदार अपने बूथ में पसरे पड़े थे।
बलमा सिपहिया मोरा, बलमा सिपहिया...।
हवलदार जी! बचाओ। मैं लुट गया। बरबाद हो गया...।
कौन है बे?
क्या है?
POLICE
साहब! खूंखार सिंह ने लूट लिया हमें। रकम छीनकर ले गया हमारी...।

क्या? हमारे होते हुए लूट-मार। खटिया खड़ी कर दूंगा खूंखारसिंह की। हवालात में बंद करके सड़ा दूंगा साले को।

तो फिर चलिए हमारे साथ।

चलो, आज उस खूंखारसिंह की सारी चर्बी निकाल दूंगा मैं...।

वह दादा के दारूखाने पर गया होगा साहब। वहीं बैठकर दारू पीता है।

थोड़ी देर बाद—

ओय, यहां खूंखारसिंह कौन है?

यह कोई नया कुक्कड़ आया है।

किस... किस... इधर...।

अबे ओय बदतमीज! यह क्या तरीका हुआ बुलाने का? किस-किस का क्या मतलब?

बैठ जाओ हवलदार!

तू खड़ा हो जा पहले। मेरा नाम हवलदार बहादुर है। बदतमीज आदमी को हवालात में बंद करके सड़ा देता हूं मैं।

नए आए हो इस इलाके में?

खटाक

अरे बाप रे, रामपुरी चाकू!

बैठ जा नीचे...।
ब... बैठता हूं। ही...ही ही!
अब बोल, क्या कहना है? मेरा ही नाम खूंखारसिंह है। तेरे से पहले जो पुलिसिया था यहां, उसका थोबड़ा बिगाड़ दिया था मैंने।
ही...ही... ही! उसने आपकी शान में गुस्ताखी की होगी जी। मैं तो बस आपके दर्शन करने आया हूं। ही...ही...ही!
कर ले दर्शन। और यह भी कान खोलकर सुन ले, पुलिस का अपुन पर बिल्कुल रोब नहीं चलता। जेल को हम ससुराल समझते हैं और जो हमें एक बार जेल पहुंचाता है, वापस आकर उसकी टंगड़ी तोड़ डालते हैं हम।
बहुत अच्छा करते हो जी! अब मैं चलूं?
फूट जा और कभी हमारे दर्शन करने की इच्छा हो तो चला आइयो यहीं पर।
ठ... ठीक है जी।
VARUN 6 SOAN

बड़ा खूंखार बंदा है। अच्छा ही हुआ कि मैंने पंगा नहीं लिया, वरना रामपुरी पार कर देता। बेचारी चम्पाकली विधवा हो जाती...।
ही...ही...ही!
हा...हा...हा!
बाहर लाला प्रतीक्षा में खड़ा था।
मेरी रकम ले आए हवलदार जी?
ओय चुप। खबरदार, जो खूंखार सिंह पर झूठा आरोप लगाया। वह तो बड़ा शरीफ बंदा है। चल फूट यहां से।
ठेका देसी शराब
यह हवलदार को क्या हो गया? खूंखार सिंह जैसे बदमाश को शरीफ आदमी बताने लगा?
खूंखार सिंह के सामने कोई हवलदार नहीं टिकता लाला। उसने छुरा दिखाया होगा और हवलदार की पैंट गीली हो गई होगी।
सिपाही रामधन राउंड लगाकर बूथ पर वापस आ चुका था।
आप कहां चले गए थे साहब?
एक बदमाश की खटिया खड़ी करने गया था।
VARUN'S SCAN

कौन था जी?
कोई खूंखारसिंह था। मैंने चूहासिंह बना दिया साले को। दो हाथ पड़े तो रोने लगा साला। कह रहा था, अब बदमाशी छोड़ देगा।
आपने खूंखारसिंह को दो हाथ मारे। कमाल कर दिया। हमने तो सुना था कि खूंखारसिंह पुलिस वालों को भी धुन डालता है।
वह तेरे जैसे पुलिस वाले होंगे। हमारा नाम हवलदार बहादुर सिंह है। समझा!
तभी—
ओय, तू फिर आ गया?
ही... ही... ही!
हड्डियां तोड़ दूंगा साले। बंद कर ही... ही... ही!
जाने दो हवलदारजी! मैं खूंखारसिंह को दस रुपये देकर आया हूं, यहां ठिया लगाने के लिए। अब मेरी रक्षा वही करेगा।
VARUN'S SCAN

ख...
खूंख्वार सिंह!
हां। जो उसे हफ्ता देता है, उसे तो कड़क से कड़क पुलिस वाला भी परेशान नहीं कर सकता। मैं तो अब यहीं बैठूंगा। ही...ही... ही!
ओह! तो यह बात है। लगता है, खूंख्वार सिंह अपने हवलदार साहब को झटका दे चुका है। तभी उसके नाम से ही इनकी घिग्घी बंधी हुई है। इस बात की रिपोर्ट इंस्पेक्टर साहब को देनी होगी।
अच्छा बैठ जा। गरीब आदमी को तो मैं वैसे भी नहीं सताता हूं।
ही... ही... ही!
उधर खूंख्वार सिंह को उसके चेले ने सूचना दी—
उस्ताद! एक बहुत बड़ी आसामी आज हमारे क्षेत्र में आ रही है।
कैसी आसामी?
हीरों का बहुत बड़ा व्यापारी है उस्ताद! चौक पर धर्मचंद जौहरी की दुकान है न, उसे ही हीरे बेचने आ रहा है। कई लाख के हीरे हैं। मुझे धर्मचंद के एक नौकर ने बताया है।
क... कई लाख...?

अपने चमचे से हीरों के व्यापारी का पूरा हुलिया पूछने के बाद खूंखारसिंह तैयार हो चौक पर पहुंच गया।
धर्मचंद की दुकान के निकट ही उसकी प्रतीक्षा करूंगा।
उसे अधिक देर प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी थी।
यही है।
DHARAM CHAND JEWELLERS
सड़क के उसी छोर पर काबू कर लेता हूं साले को।
यह पिस्तौल है सेठ! कोई आवाज न निकालना, वरना गोली चल जाएगी।
ओह!
उधर दाईं तरफ एक गली है सेठ! चुपचाप उधर चलो।
म... मगर क्यों?
मेरा नाम खूंखार है सेठ। सवाल पूछने वाले की गरदन तोड़ देता हूं। चुपचाप गली में चल।
आह!
VARUN'S SCAN

खूंखार सिंह के मामले में कोई भी व्यक्ति पड़ना नहीं चाहता था, इसलिए कुछ लोग देखकर भी अनदेखी कर गए।
खूंखार सिंह किसी को लूटना चाहता है, मगर मुझे क्या?
इस बदमाश के मामले में नहीं बोलूं तो ही फायदा है।
गली बहुत संकरी और सुनसान थी।
लाओ सेठ! अब तुम वह हीरे निकालो, जो धर्मचंद को बेचने के लिए लाए थे।
त... तुम्हारे पास पिस्तौल नहीं है।
हा... हा... हा! अबे, तेरे जैसे कागज़ी आदमी को काबू करने के लिए तो खूंखार सिंह का एक हाथ ही बहुत है! पिस्तौल की धमकी तो इसलिए दी थी कि तू सड़क पर शोर न मचाए। ला, अब हीरे निकाल। इसी बक्से में हैं क्या?
न... नहीं दूंगा...।
तेरा तो बाप भी देगा...।
ढिशुम
आह!
सेठ की चीख सुनकर गली के एक मकान की खिड़की खुली।
कौन है? क्या हो रहा है वहां?
ओय चुप। मुंडी अंदर करके खिड़की बंद कर ले।
युवक ने घबराकर खिड़की बंद कर ली।
खूंखार सिंह है। किसी गरीब को लूट रहा है। उधर रोशनदान से झांककर देखूंगा।
उधर सेठ ने अपनी शक्ति जुटाकर खूंखार पर हमला कर दिया।
यह ले...
धाड़
आह!

खूंखार सिंह गुस्से से पागल हो गया।

तेरी तो मैं...।

धाड़

आ...ई...ई!

खूंखार सिंह पर उठने वाला हाथ तोड़ दिया जाता है सेठ!

आ...ई...ई!

धाड़

आ...ई...ई...!

खूंखार सिंह ने नीचे गिरे हुए सेठ से ब्रीफकेस छीना तो उसने उसकी टांग पकड़ ली।

न...नहीं जाने दूंगा।

अबे छोड़।

उसने एक ठोकर मारी-

ठाक

आह!

मगर सेठ ने उसकी टांग नहीं छोड़ी।

तू ऐसे नहीं मानेगा।
खटाक

और–
खटाक
आ... ई...ई!

कुछ क्षण तड़पकर सेठ शांत हो गया।
मर गया साला। माल कितना हाथ लगा?

ब्रीफकेस के अन्दर रखा मखमल का डिब्बा हीरों से भरा हुआ था।
वो मारा! यह तो पूरे जीवन ऐश करने का प्रबंध हो गया है।

मकान की खिड़की से झांकने वाले युवक ने छुपकर खून होते देखा था। खूंखारसिंह के भागने के बाद वह युवक पुलिस बूथ पर पहुंचा।
हवलदार जी...।
हवलदार जी...
क्या है बे, क्यों चिल्ला रहा है?

उसने डिब्बा जेब में रखा और ब्रीफकेस लाश के निकट फेंककर गली से बाहर निकल गया।
वह जी... खूंखारसिंह खू...हफ... हफ...।
क्या SSS? खूंखारसिंह आ रहा है?

सूचना मिलते ही खड़गसिंह घटनास्थल पर पहुंच गया।

हवलदार! तुम यहां मौजूद थे, फिर भी एक बदमाश दिन दहाड़े खून करके भाग गया?

म... मेरे सामने खून नहीं हुआ साहब!

पूछताछ से पता चला कि मरने वाले के पास पांच लाख के हीरे थे।

लाश उठवाने के बाद खड़गसिंह ने क्षेत्र की उन सभी जगहों पर खूंखारसिंह की तलाश आरम्भ की, जहां वह अक्सर देखा जाता था। सबसे पहले दादा के दारूखाने पर पुलिस ने धावा बोला।

खूंखारसिंह कहां है?

यहां तो नहीं है साहब!

क्या बकता है बे?

खूंख्वारसिंह ने हवलदार को डराकर भगा दिया था क्या?

हां साहब! उसका रामपुरी चाकू देखते ही इनकी घिग्घी बंध गई थी।

और दादा ने पूरी घटना विस्तार से सुना दी।

य... यह झूठ बोलता है साहब!

चुप। तुमसे इस बारे में बाद में बात होगी।

अच्छा दादा, कुछ बता सकते हो कि खूंख्वारसिंह कहां गया होगा?

हमें कुछ पता नहीं साहब। वैसे वह पिछली गली के एक मकान में रहता है। शायद अपने घर ही गया हो।

चलो, उसके घर पर छापा मारना होगा।

खूंख्वारसिंह के मकान को घेर लिया गया।

तुम भीतर जाकर देखो हवलदार बहादुर!

म... म... मैं...?

यह बकरी की तरह मैं-मैं क्या कर रहे हो? जाकर देखो...।

यह खुद क्यों नहीं जाता देखने? इंस्पेक्टर तो यह है। मुझे मरवाएगा।

ठ... ठीक है। जाता हूं।

हवलदार बहादुर दरवाजे पर पहुंचे।

खट... खट...

खूंख्वार भइया... जरा बाहर तो आओ।

ही... ही... ही! उसे धोखा देने के लिए भइया कह रहा हूं जी!

तभी— इंस्पेक्टर साहब! मैंने खूंखारसिंह को कब्रिस्तान की ओर भागकर जाते देखा है। उधर घना जंगल भी है। वहीं छुपने गया होगा।

अच्छा...!

खड़गसिंह हवलदार बहादुर और दो सिपाहियों के साथ कब्रिस्तान की ओर रवाना हुआ।
वह अवश्य ही कब्रिस्तान के पीछे जंगल में गया होगा। तुम दोनों कब्रिस्तान से होते हुए जंगल में पहुंचो...
... और मैं दूसरी तरफ से घूमकर आता हूं।
और मैं साहब?
कब्रिस्तान
तुम उस तरफ से जंगल में पहुंचो। हमें चारों तरफ से घेराबंदी करनी है।
ठीक है साहब! मैं उधर से जाता हूं। अगर खूंखारसिंह मिल गया तो इस डंडे से सिर फोड़ दूंगा साले का।
लेकिन कब्रिस्तान के पीछे फैले घने जंगल में प्रवेश करते ही हवलदार की हवा खराब होगई।
ब... बाप रे! यहां तो जानवर भी हो सकते हैं।
तभी—
सर्र... सर्र
झाड़ियां हिल रही हैं। श... शेर!
वह पलटकर भागना ही चाहते थे कि झाड़ियों में किसी के खांसने की आवाज उभरी—
आंय!
खों... खों...
यह तो कोई बंदा खांस रहा है। जरूर कोई चोर यहां छुपा हुआ है।
कौन है बे वहां? सामने आ जा, वरना डंडे से ठोक दूंगा।

वह जैसे ही निकट पहुंचे—
हा... हा... हा!
ख... खूं... खूं... खार..
मुझे पकड़ने आया है तू ?
न... नहीं हुजूर! म... मैं तो जंगल में वह करने जा रहा था। ही... ही... ही...।

झूठ बोलता है साले। तेरा वह अब मैं यहीं निकाल देता हूं।
खटाक
अरे बाप रे, रामपुरी! म... मर जाऊंगा हुजूर!
अंतड़ियां बाहर कर दूंगा साले।
म... माफ कर दो साहब। मेरी बीवी विधवा हो जाएगी।
तभी—
यह क्या हो रहा है हवलदार?
ओह, साहब आ गए।
खूंखारसिंह ने तुरंत हवलदार को दबोच लिया।
वहीं रुक जाओ इंस्पेक्टर, वरना तुम्हारे हवलदार की मुंडी काट डालूंगा।
साहब! ब... बचाओ।

तुम कानून से बच नहीं सकते खूंखार सिंह। हवलदार को छोड़ दो।
स... साहब ठीक कह रहे हैं। छोड़ दो मुझे।
तुम मेरा रास्ता छोड़ दो इंस्पेक्टर!

नहीं। मैं तुम्हें गिरफ्तार करने आया हूं।
मुझे कोई गिरफ्तार नहीं कर सकता।
कहकर...

... उसने हवलदार को खड़गसिंह पर धकेल दिया।
ओय, क्या करता है?
धाड़
उफ!

और पलटकर झाड़ियों में घुस गया।
धांय
क... क्या करते हैं साहब? मेरे लग जायगी।

हटो। तुम्हारे कारण वह बचकर निकल गया है।
म... मैंने क्या किया है साहब? गिरे आप खुद थे। ही... ही... ही!

शटअप! मैंने तुम्हें खूंखारसिंह के सामने हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाते अपनी आंखों से देखा था। तुम्हें पुलिस वाला कहते हुए भी शर्म आती है।
क्या बात करते हैं साहब? मैं गिड़गिड़ा नहीं रहा था, बल्कि उसका चाकू छीनने के लिए नाटक कर रहा था, मगर आपने आकर गड़बड़ कर दी।

चुप। मैं तुम्हारे नाटक को अच्छी तरह समझता हूं। नाक कटवा दी है तुमने पुलिस डिपार्टमेंट की। मैं तुम्हारी रिपोर्ट ऊपर भेजूंगा। इस बार तुम्हें नौकरी से निकलवाकर ही मुझे चैन आएगा। दफा हो जाओ अब यहां से।

भगवान करे पेट फट जाए तेरा। मेरा दुश्मन बन बैठा है जालिम कहीं का।

हवलदार बहादुर मुंह लटकाए अपने घर पहुंचे।

आज इतनी जल्दी क्यों आ गए?

खड़गसिंह ने फिर सस्पेंड कर दिया है मुझे...।

इस मुंडी कटे खड़गसिंह को तुमसे क्या दुश्मनी है? महीने में दो बार सस्पेंड करता है। सत्यानाश हो जाए उसका।

और कोस भाग्यवान! इस बार तो उसने नौकरी से निकलवाने की धमकी दी है।

बाप का राज है उसके। नौकरी से कैसे निकाल देगा?

निकलवा सकता है भाग्यवान! वह अफसर है।

तभी- राम-राम बहन! ओह, आज तो भाई साहब भी घर पर ही हैं।

राम-राम ऊषा बहन, आओ।

नमस्ते!

ऊषा उसके पड़ोस में रहती थी।

किसे कोस रहे थे आप दोनों मिलकर?
इनके अफसर को। मुआ इनका दुश्मन बना हुआ है। आए दिन सस्पेंड कर देता है।
अफसर सारे एक जैसे ही होते हैं। मेरे उनका जो अफसर था, वह भी बहुत खराब था। लेकिन अब तो "मार-फटकार बाबा" की कृपा से वह बिल्कुल सीधा हो गया है।
मार-फटकार बाबा! ही...ही...ही!
यह कौन हैं उषा?
बहुत पहुंचे हुए आदमी हैं। तांत्रिक भी हैं। जिससे खुश हो जाते हैं, उसकी सारी विपदाएं दूर हो जाती हैं।
सच! फिर तो हमें भी उनसे मिलवा दो।
मैं उनका पता बता देती हूं। भाई साहब खुद जाकर मिल लेंगे, मगर एक बात याद रखने की है। बाबा को हाथ चलाने की आदत है। अपने भक्तों को लातों-घूंसों से मारते हैं। इसलिए उनका नाम मार-फटकार बाबा पड़ा है, लेकिन जो उनकी मार-फटकार सह लेता है, उसके बिगड़े काम बन जाते हैं।
अरे! मार-फटकार से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। इनके साथ तो रोज ही यह होता है।
VARUN'S SCAN

हांजी! अगर वह करामाती बाबा हैं तो मैं मार-फटकार भी सह लूंगा।

तो आप उनके पास चले जाइए। गंदे नाले के किनारे पीपल का जो पुराना पेड़ है, उसके नीचे ही बाबा बैठते हैं।

शाम को हवलदार बहादुर मार-फटकार बाबा से मिलने पहुंच गए।

आंय! यह तो तांत्रिक कम और जोकर ज्यादा लगता है। ही... ही... ही...!

प्रणाम बाबा!

कौन उल्लू का पट्ठा है? लात मार दूंगा।

फटकार लगा रहे हैं। ही... ही... ही!

मैं आपका भक्त हूं बाबा... हवलदार बहादुर।

उ... ई... ई!

तड़ाक

ही... ही... ही! मैंने बुरा नहीं माना बाबा! महापुरुषों का वचन है कि अगर कोई तुम्हारे गाल पर एक थप्पड़ मारे तो तुम दूसरा भी उसके सामने कर दो। यह लीजिए। ही... ही... ही!

ढिशुम
मर गया।
बाबा ने ताककर नाक पर घूंसा मारा था।

मार-मारकर भुरकस निकाल दूंगा तेरा। मेरी पूजा में वह डाल दिया। क्या कहते हैं उसे... अबे बोल...।
वि... विघ्न।

हां, यही डाला है तूने। तू आदमी नहीं है, जंगली सुअर है। गंदी आत्मा है...।
आप जो कहते हैं, मैं वही हूं और जो नहीं कहते, वह भी हूं। बस, मुझ पर अपनी कृपा कर दीजिए।

ले फिर...।
धाड़
अरे... अरे... ही... ही... ही!

मार-फटकार बाबा ने हवलदार बहादुर का हुलिया बिगाड़ दिया।
आह! मार डाला बाबा... उफ...।
उल्लू का पट्ठा।

ही... ही... ही! मैं आपकी किसी भी बात का बुरा नहीं मानूंगा बाबा।
अबे ओ ऊत के पूत। क्या चाहता है तू?

आपकी कृपा बाबा! एक पाखंडी इंसान ने मेरा जीना मुश्किल कर रखा है। मुझे उससे बचा लीजिए।
कौन है वह?
हवलदार ने खड़गसिंह के विषय में बताया।

अच्छा, तू अपने अफसर से दुखी है गंदे कीड़े। ठीक है, मैं तेरी सहायता करूंगा, मगर कुछ दक्षिणा लाया है। पांच सौ एक रुपये से कम नहीं लेता मैं।
ल...लाया हूं जी!
ऊषा ने पहले ही बता दिया था, इसलिए वह रुपये साथ लाए थे।

रुपये लेकर बाबा ने अपने बिछौने के नीचे रखे और फिर वहीं से एक अंडा निकाला।
ले यह अंडा!
अंडा... ही...ही... ही! अपने नीचे से निकाला है बाबा?

बाबा ने उल्टा हाथ रसीद किया।
मज़ाक करता है हमसे...।
तड़ाक
न... नहीं।

तो फिर सुन, काली मुर्गी ने अमावस की रात में श्मशान के बीच लगे बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर यह अंडा दिया था। पेड़ पर रहने वाली प्रेतात्मा इस अंडे में बंद है। तू इसे ले जा।
क्या खड़गसिंह को इसका आमलेट खिलाना होगा बाबा?

बीच में मत बोल सड़े टिंडे। ध्यान से सुन, कल भी अमावस की रात है। तू यह अंडा लेकर कब्रिस्तान चला जाइयो और वहां किसी पुरानी कब्र में इस अंडे को दबा दीजियो। आधी रात के समय जाना होगा।
अ... आधी रात... कब्रिस्तान... प... पुरानी कब्र...।
डर मत पागल के बच्चे। इस अंडे में बंद आत्म तेरी रक्षा करेगी। कब्रिस्तान में तुझे डर नहीं लगेगा। अगर तूने यह अंडा पुरानी कब्र में दबा दिया तो तेरा अफसर हमेशा तेरे सामने सिर झुकाए रहेगा।
ठ... ठीक है बाबा!
एक बात और याद रखियो। कब्रिस्तान अकेले ही जाना होगा। और कल तक इस अंडे की हिफाजत करनी होगी, अगर यह टूट गया तो प्रेतात्मा आजाद हो जाएगी और तेरी ही गरदन तोड़ डालेगी। अब दफा हो जा यहां से।
अ... अच्छा जी!
हवलदार के जाने के बाद-
ही...ही...ही। बड़ा मूर्ख था। पांच सौ एक देकर नब्बे पैसे का अंडा ले गया। बस, रोज एक ऐसा मूर्ख फंसता रहे तो अपन को दारू और तंदूरी मुर्गों की कमी न रहे।

उधर-
ले पकड़ यह अंडा!
शर्म नहीं आई एक अंडा लाते हुए। अकेले खाओगे क्या?

बकवास न कर। यह अंडा मार-फटकार बाबा ने बहुत मुश्किल से दिया है।
ही...ही... ही! बाबा ने दिया है अंडा।

अगर बाबा यहां होते तो तेरी ही...ही...ही बंद कर देते। देख कितना मारा है मुझे, आंख भी नीली हो गई है।
आंख को मारो गोली। यह बताओ, बाबा ने कहा क्या?

हवलदार ने बाबा से भेंट का हाल सुनाया और अंत में कहा—
मगर मैं कब्रिस्तान नहीं जाऊंगा। डर लगता है।
पगला गए हो क्या? जब बाबा का अंडा साथ होगा तो डर कैसा? कुछ नहीं होगा तुम्हें।

अगली रात ग्यारह बजे के करीब हवलदार बहादुर डर से कांपते हुए कब्रिस्तान के निकट पहुंचे।
अरे बाप रे...कितना भयानक दृश्य है।

बाबा ने कहा था, यह अंडा मेरी रक्षा करेगा। इसे हाथ में लेकर कब्रिस्तान में घुसता हूं।

दीवार फांदकर वह अंदर पहुंचे।
चीं...चीं... चीं...
रक्षा करना राम जी! बड़ी भयानक आवाजें हैं।
सर्र... सर्र...सर्र
इतना अंधेरा है, पुरानी कब्र कैसे तलाश करूं?
अचानक-
आ... ई... ई!
क...क्या बला थी यह!भाग लूं!
ओह!
थोड़ा संभलने पर-
य...यह तो पुरानी कब्र है। यहीं दबा देता हूं अंडा।

तभी–
खट... सपर... सपर
हे भगवान्! यह आवाज कैसी है, जैसे कोई चल रहा है।
भ... भूत होगा।
वह उठकर भागे...
...और निकट खड़े पेड़ के पीछे जा छुपे।
भ...भूत!
बू...हू...हू! अब क्या करूं ...यह तो कोई मुर्दा कब्र से उठकर आ रहा है... मेरी रक्षा करना अंडेजी।
आंय! यह तो कब्र में घुस रहा है।
कुछ क्षण बाद भूत खड़ा हो गया और पेड़ की ओर बढ़ा।
इ... इधर आ रहा है।
VARUN'S SCAN

घबराकर उन्होंने उसे अंडा ही फेंककर मार दिया।
उफ!
फिर नीचे से एक पत्थर उठाकर मारा।
आ... ई... ई...!
ताड़
दोनों चौकीदार निकट आए तो लालटेन का प्रकाश नीचे गिरी हुई छाया पर पड़ा।
आंय! भूत मर गया।
कौन है भाई?
ये कौन हैं?
ओह! यह कौन है?
बेहोश है। सिर से खून भी निकल रहा है।
अरे! यह तो खूंखारसिंह है। कब्रिस्तान में क्या करने आया था?
खूंखारसिंह बेहोश पड़ा था, इसलिए हवलदार ऐंठते हुए बाहर निकल आए।
ओय, हट जाओ उसके पास से।
प... प... पुलिस!
अ... आपने मारा है इसे?
शोर सुनकर कब्रिस्तान में काम करने वाले चौकीदार उधर आ निकले थे।
हां, यह बहुत भयानक बदमाश है।
ओह! यह बॉक्स कैसा है?
फिर हवलदार ने उस बॉक्स को उठा लिया।

उन्होंने बॉक्स खोला।
हीरे! अब समझा, खूंखारसिंह ने हीरों का यह बॉक्स इस पुरानी कब्र में छुपाकर रख दिया था। अब यह हीरे निकालने आया था, मगर मैंने भूल के धोखे में पीट दिया साले को। ही... ही... ही!
ओय, तुम दोनों जरा कानून की मदद करो। इस बदमाश को मेरे साथ मिलकर थाने ले चलो।
अच्छा जी!
चलिए।
खड़गसिंह नाइट ड्यूटी पर था। हवलदार ने दफ्तर में जाकर उसके सामने हीरों का बॉक्स रख दिया।
सर! यह वह हीरे हैं और इनको चुराने वाला कातिल और बदमाश बाहर बेहोश पड़ा है। हम उसे पकड़ लाए हैं। आप चलकर देख लीजिए।
त... तुम खूंखार सिंह को पकड़ लाए हो?
ही... ही... ही! पाठको! कितना हैरान हो रहा है यह? हैरान तो आज हम भी हैं। बाबा का अंडा सचमुच चमत्कारी था। अब खड़गसिंह का मुंह बंद हो जाएगा और हमारी बहादुरी का रोब भी इस पर पड़ेगा। वैसे सच्चाई क्या है, आप लोग तो जानते ही हैं। ही... ही... ही!
अगला आकर्षण
हवलदार बहादुर
और जाली नोटों के व्यापारी
अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करा लें.